सामाजिक परिवर्तन के मुख्य स्रोत (Important Sources of Social Change) —

कुछ समाजशास्त्रीयों के अनुसार सामाजिक परिवर्तन के निम्न तीन स्रोत हैं—

(1) खोज (Discovery) —

मनुष्य ने अपने न्यून एवं अनुभवों के आधार पर अपनी समस्याओं को सुलझाने और एक बेहतर जीवन व्यतीत करने के लिए बहुत तरह की खोज की है। जैसे शरीर में रक्त-संचालन, बहुत सारी बीमारियों के कारणों, खनिजों, खाद्य पदार्थों, पृथ्वी में गुरुत्वाकर्षण की क्षमता आदि हजारों किस्म के तथ्यों की मानव ने खोज की। जिनसे उनके भौतिक एवं गैर-भौतिक जीवन में काफी परिवर्तन आया। मनुष्य एक खोजी प्रवृति का जीव है और वह आज भी नयी-नयी खोजों में लगा है। इन खोजों की सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

(2) आविष्कार (Invention) —

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के जगत में मनुष्य के आविष्कार इतने अधिक हैं कि उनकी गिनती करना मुश्किल है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी-क्षेत्र के आविष्कारों ने मानव समाज में एक युगान्तकारी एवं क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया है। आज विश्व में शायद ही कोई व्यक्ति या समाज होगा, जिसका जीवन प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित न हुआ हो। मानव समाज में जितने भी परिवर्तन आए हैं, उन परिवर्तनों के मुख्य स्रोत भौतिक जगत के आविष्कार रहे हैं।

(3) प्रसार (Diffusion) —

सांस्कृतिक जगत् के परिवर्तन में

Ajanta Oxford

प्रसार का प्रमुख योगदान रहा है। पश्चिमीकरण (Westernization), आधुनिकीकरण (Modernization) एवं भूमंडलीकरण (Globalization) जैसी प्रक्रियाओं का मूल्य आधार प्रसार ही रहा है। आधुनिक युग में प्रौद्योगिकी का इतना अधिक विकास हुआ है कि प्रसार की गति बहुत तेज हो गयी है। यही कारण है कि आज हम एकल विश्व (One World), एकल सरकार (One Government) या विश्व-ग्राम (Global Village) जैसी अवधारणाओं पर विचार करने लगे हैं।

(4) आन्तरिक विभेदीकरण (Internal Differentiation)—

जब हम सामाजिक परिवर्तन के सिद्धान्तों को ध्यान में रखते हैं, तो ऐसा लगता है कि परिवर्तन का एक चौथा स्रोत भी संभव है—वह है आन्तरिक विभेदीकरण। इस तथ्य की पुष्टि उद्विकासीय सिद्धान्त के प्रवर्तकों के विचारों से होती है। उन लोगों का मानना है कि समाज में परिवर्तन समाज के स्वाभाविक उद्विकासीय प्रक्रिया से भी होता है। हर एक समाज अपनी आवश्यकताओं के अनुसार धीरे-धीरे विशेष स्थिति में परिवर्तित होता रहता है। प्रारंभिक समाजशास्त्रीयों जैसे— स्पेन्सर, हॉबहाउस, दुर्खाइम एवं बहुत सारे मानवशास्त्रीयों ने अपने उद्विकासीय सिद्धान्त में स्वतः चलनेवाली आन्तरिक विभेदीकरण की प्रक्रिया पर काफी बल दिया है। इसमें कोई सन्देह की बात नहीं है कि इस आन्तरिक विभेदीकरण की प्रक्रिया में खोज एवं आविष्कार का अपना एक अलग महत्व है।